दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 03.03.2023

प्रकाशनार्थ

दिनांक 03.03.2023 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में **अभिभावक–शिक्षक सम्मेलन के आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या डॉ. गीता दत्त** ने कहा कि परिवार समाज व राष्ट्र निर्माण में अभिभावक की विशेष भूमिका होती है क्योंकि विद्यार्थी की प्रथम शिक्षा परिवार व अभिभावकों से ही शुरू होती है। बच्चों के व्यवहार पर उनके परिवार के सदस्यों का सीधा प्रभाव पड़ता है। इसलिए अभिभावक एक रोल मॉडल के रूप में बच्चे को जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद करता है। हम यदि अपने संस्कारों से बच्चों को सीचेंगे तो हमें अच्छे इंसान बनाने का अंकुर प्राप्त होगा। उन्होंने अभिभावकों की जिम्मेदारी को इंगित करते हुए कहा कि अभिभावक व शिक्षक दोनों मिलकर एक श्रेष्ठ नागरिक तैयार करते है। अभिभावक की छोटी–छोटी अच्छी आदतें बच्चों के अन्दर प्रेरणा का भाव उत्पन्न करती है। इसके साथ ही विद्यालय में शिक्षक ही विद्यार्थी के अभिभावक के दायित्व का निर्वहन करते हुए उसे अनुशासित रखने का प्रयास करता है। इसलिए शिक्षकों को भी स्वयं को सकारात्मक ढंग से एक रोल मॉडल के रूप में विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए।

कार्यक्रम में अभिभावकों के बीच से श्री कप्तान सिंह ने कहा कि इस महाविद्यालय की स्थापना में गोरक्षपीठ के सम्मानित संतो का यह समाज ऋणी है जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने शिक्षक के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि एक मॉ चाहती है कि उसके बच्चे पेट भरा रहे, पिता चाहता है कि बच्चा आगे बढ़े और शिक्षक चाहता है कि बच्चा समाज में हमसे भी बेहतर प्रदर्शन करे। इसी क्रम में **अभिभावक श्री राम बड़ाई यादव** ने कहा कि सम्पूर्ण मानवता रूपी पहिया अध्यापक रूपी कीली से संचालित होती है। स्वामी विवेकानन्द एक स्वस्थ समाज में अच्छा नागरिक तैयार करने में विद्यार्थियों की विशेष भूमिका बतायी है। किसी विद्यालय के प्रति शिक्षकों का समर्पण भाव ही आने वाले समय में एक स्वस्थ समाज के रूप में परिणित होता है।

महाविद्यालय के मुख्य नियन्ता प्रो. धीरेन्द्र सिंह ने कहा कि एक शिक्षक पठन–पाठन के साथ ही अनुशासन बनाने में भी कार्य करता है क्योंकि एक अच्छे नागरिक के निर्माण में अनुशासन की भी विशेष भूमिका होती है। शिक्षक के सामाजिक दायित्व का बोध ही समाज के प्रति योगदान हेतु उसे आगे बढ़ाता है। अभिभावक की भी यह विशेष जिम्मेदारी है कि उसका बच्चा विद्यालय कब जाता है एवं उसकी गतिविधियां कैसी है इसपर निगरानी बनाये रखे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि शिक्षा, संस्कृति व राष्ट्रीयता के दिव्य प्रसार हेतु संकल्पित इस महाविद्यालय द्वारा अनुशासित विद्यार्थी समाज निर्माण में अपना योगदान करता है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि परिवार की पाठशाला में ही व्यक्ति नागरिकता की वर्णमाला सीखता है। बच्चों में संस्कारों का अंकुरण परिवार से होता है। भारत में सोने की चिड़िया या विश्वगुरू कहलाता था तो उसमें परिवार की भी विशेष भूमिका थी। संयुक्त परिवार का टूटना, परिवार व राष्ट्र निर्माण में बाधक है। कोई देश अपनी भूमि से महान नही बनता बल्कि अपने नागरिकों की भूमिका से ही महान बनता है। इसलिए हमें अपने भावी पीढ़ी के बीच संस्कारों का अंकुरण करना होगा। आज के इस कार्यक्रम का उद्देश्य परिसर व परिवार के बीच संवाद स्थापित करना था। क्योंकि संवाद का अभाव हमारे उपर नकारात्मक प्रभाव छोड़ता है। एक अच्छे नागरिक के निर्माण में शिक्षक के साथ ही उसके अभिभावक की भी विशेष भूमिका होती है। **कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजय कुमार त्रिपाठी ने एवं आभार ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह** ने किया। आज के इस कार्यक्रम में कुल 107 अभिभावकों द्वारा फीडबैक प्राप्त हुआ। इस अवसर पर **महाविद्यालय के शिक्षक प्रो. शशि प्रभा सिंह, प्रो. अर्चना सिंह, डॉ. विवेक शाही, डॉ. अवधेश शुक्ला, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. संजीव सिंह, डॉ. चण्डी प्रसाद पाण्डेय** सहित बड़ी संख्या में अभिभावक एवं विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

डॉ.(सुनील कुमार सिंह)
सह–प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क